राजस्थान पत्रिका

Tuesday, March 9th, 2010

बेंगलूरु के जैन विश्वविद्यालय में सोमवार को छात्रों से अंतर संवाद करते डीआरडीओ के पूर्व प्रमुख डॉ. वी.के. अत्रे।

राष्ट्र हित में हो आईटी का इस्तेमाल

डीआरडीओ के पूर्व प्रमुख अत्रे बोले जैन विश्वविद्यालय में मना राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

कार्यालय संवाददाता

बेंगलूरु, 8 मार्च। देश को नए विचारों की सख्त आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो पारम्परिक विचारों से हटकर कुछ नया सोचने को प्रेरित करे। यह मानना है देश के वरिष्ठ वैज्ञानिक और रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन के पूर्व प्रमुख डॉ. वी.के. अत्रे का। वे सोमवार को जैन विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमण की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे।

माइक्रो-इलेक्ट्रो-मैकेनिकल - सिस्टम विषय पर व्याख्यान देते हुए अत्रे ने कहा कि तकनीक में बड़ी क्षमता और ताकत होती है। इसका सकारात्मक प्रयोग देश को आबाद कर सकता है लेकिन इसका गलत इस्तेमाल देश को बर्बाद भी कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत में मधुमेह के करीब 40 फीसदी रोगी हैं लेकिन तकनीक की प्रचुरता होते हुए भी अब तक इसका प्रभावशाली टीका विकसित नहीं किया जा सका है।

अत्रे ने माइक्रो-इलेक्ट्रो-मैकेनिकल सिस्टम और उससे संबंधित विभिन्न विषयों पर भी चर्चा की। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स, प्रशासनिक ढांचा, हवाई संरचना, अंतरिक्ष और स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स के योगदान के बारे में भी बताया। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब दिया और उनसे संबंधित विषयों पर चर्चा भी की।